कम्बाइंड स्वरूपो का अनुभव

1 अपने कम्बाइन्ड (Combined; मिला जुला) रूप की स्थिति में सदा स्थित रहते हो? पहले, आत्मा और शरीर यह कम्बाइन्ड स्वरूप है जो अनादि सृष्टि चक्र में अनादि पार्ट बजाते रहते हैं।

2 दूसरा, इस पुरूषोत्तम संगमयुग पर ब्राह्मण आत्माएं अर्थात् बच्चों और बाप का सदा साथ कम्बाइन्ड रूप है।

3 तीसरा, यादगार रूप में भी चतुर्भुज रूप दिखाया है। सदैव कम्बाइन्ड रूप की नॉलेज को धारण करते हुए चलो तो सदा हाइएस्ट अथॉरिटी अपने को अनुभव करेंगे।

30.04.77

अव्यक्त पालना का रिटर्न

प्रश्न हमारे, उत्तर बापदादा के

प्रश्न : मीठे बाबा, 'बेहोश की स्टेज़ में अपना सब कुछ लुटा दिया' बाबा आपका क्या अभिप्राय हैं?

उत्तर : मीठे बच्चे,

1. पहले अपने शरीर और आत्मा के कम्बाइन्ड रूप को सदा स्मृति में रखो। शरीर रचना है, आत्मा रचता है। रचता और रचना का कम्बाइन्ड रूप है। तो स्वत: ही मालिक पन स्मृति में रहेगा। मालिक की स्मृति अर्थात् हाइएस्ट अथॉरिटी में रहेंगे। चलाने वाले होंगे न कि उनके वश चलने वाले।

2. लेकिन चलते-चलते जैसे लोगों ने आत्मा परमात्मा को मिलाकर एक कर लिया, वैसे आत्मा और शरीर को अलग-अलग के बजाए मिलाकर एक मान लिया है। अर्थात् अपनी अथॉरिटी की स्मृति समाप्त कर दी। चलते- चलते बॉडी-कानसेस (Body-Conscious; देह अभिमान) हो गये तो कम्बाइन्ड के बजाए एक ही मानने लगे। तो अपने को भूला उसकी रिजल्ट क्या होगी! सब कुछ गंवाया तो बेहोश की स्टेज में अपना सब कुछ लुटा दिया।

30.04.77

मन की बात... बापदादा के साथ

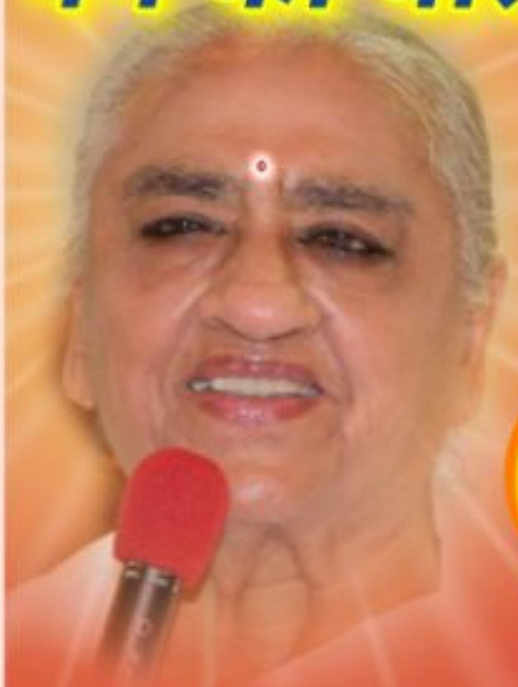

मैं आत्मा :-
मीठे बाबा,
बच्चे कौन-कौन से
नाज़ नखरे, रोब
दिखाते हैं?

बापदादा :- प्यारे बच्चे,

★ कोई-कोई रूसते भी बहुत हैं। रूसने को एक मनोरंजन समझते हैं। बार-बार साथी को रोब भी बहुत दिखाते हैं - हम तो ऐसे चलेंगे ही। हम तो यह करेंगे ही। आपको भी करना है। आपने वायदा किया है आपको लेकर ही जाना है। सर्वशक्तिवान हो तो शक्ति दो। मदद देना आपका काम है। लेकिन मदद लेना मेरा काम है - यह याद नहीं रखते। 'एक कदम मेरा हज़ार कदम साथी का' - यह भूल जाते हैं। जो बातें साथी ने सुनाई हैं वहीं बातें फिर साथी को ही याद दिलाते हैं। तो यह रोब हुआ ना?

★ स्मृति की अंगुली बार-बार खुद छोड़ देते हैं और फिर कहते आप अंगुली क्यों नहीं पकड़ते हो। ऐसे नाज़ नखरेली बहुत हैं। लेकिन याद रखो ऐसा कम्पैनियन जो नयनों पर बिठाकर ले जाए ऐसा कब मिलेगा? तो कम्पैनियन से सदा तोड़ निभाओ। अर्थात् कम्बाइन्ड रूप में रहो।

30.04.77

30-04-77 अव्यक्त वाणी का मुख्य बिंदु

कम्बाइंड स्वरूप की स्मृति

जैसे शरीर और आत्मा कम्बाइंड है

संगमयुगी ब्राह्मण बच्चे और बाप कम्बाइंड है

विष्णु चतुर्भुज कम्बाइंड है

ऐसे सदैव कम्बाइंड रूप की नॉलेज को धारण करते हुए चलो तो सदा हाइएस्ट अथॉरिटी अनुभव करेंगे

30-04-77 की अव्यक्त वाणी से स्वमान

मैं बाप के साथ कम्बाइन्ड रूप हूँ।

बाप के साथ कम्बाइन्ड अर्थात् दिल के सिंहासन पर सच्चे साथीको बैठाने वाली। संकल्प में भी आकर्षित न होने वाली। एक कदम मेरा हज़ार कदम साथी का स्मृति स्वरूप ।

30-04-77

हाईएस्ट अथॉरिटी की स्थिति का आधार - कम्बा-इन्ड रूप की स्मृति है

(1) आत्मा और शरीर का कम्बाइंड रूप

(2) बाप और बच्चे का कम्बाइंड रूप

(3) यादगार चतुर्भुज कम्बाइन्ड रूप